॥ श्रीः ॥

॥ दोहावली ॥

* गोस्वामि तुलसीदास कृत *

जिसमें

ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि भरे ऐसे
दोहे और संतोष की शिक्षाएं हैं ॥

प्रथमवार

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
सन् १९०८ ई० ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

दोहावली ॥

दोहा।

राम बामदिशि जानकी लषण दाहिनी ओर। ध्यान सकल कल्याणमय सुरतरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ सीता लषण समेत प्रभु सोहत तुलसीदास। हरषत सुर बरषत सुमन सगुण सुमंगलवास ॥ २ ॥ पंचवटी बट विटपतरु सीतालषण समेत। सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमंगल देत ॥ ३ ॥ चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सियलषण समेत। राम नाम जप जाग कहि तुलसी अभिमत देत ॥ ४ ॥ पय अहार फल खाइ जो रामनाम षटमास। सकल सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास ॥ ५ ॥ रामनाम मणि दीप धरु जीह देहरीद्वार। तुलसी भीतर बाहिरो जो

चाहसि उजियार ॥ ६ ॥ हिय निर्गुण नयनन सगुण रसनानाम सुनाम । मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम ॥ ७ ॥ सगुण ध्यान रुचि सरस नहिं निर्गुण मन ते दूरि । तुलसी सुमिरहु रामको नाम सजीवनमूरि ॥ ८ ॥ एकछत्र यकमुकुटमणि सब वर्णहु पर जोइ । तुलसी रघुवर नामके वरण विराजत दोइ ॥ ९॥ रामनामको अङ्क है सब साधन है सून । अङ्कगये कछु हाथ नहिं अङ्क रहै दशगून ॥ १० ॥ नाम रामको कल्पतरु कलि कल्याण निवास । जो सुमिरत भयो भागते तुलसी तुलसीदास ॥ ११ ॥ राम नाम जपि जोह जन भये सुकृत सुख शालि । तुलसी यहां जो आलसी गयो आजुकी कालि ॥ १२ ॥ नाम गरीब निवाज को राजदेत जन जोन । तुलसी मन परहरत नहिं घुरबिनियाकी बोन ॥ १३ ॥ काशी बिधि बसि तनु तजै हठ तन तजै प्रयाग । तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग ॥ १४॥

मीठो अरु कठवति भगे रौताई अरु पेम। स्वारथ परमारथ सुलभ राम नाम के प्रेम ॥ १५ ॥ राम नाम सुमिरत सुयश भाजन भये कुजात। कुतरु कुसुरपुर राज मग लहत भुवन विख्यात ॥ १६ ॥ स्वारथ सुख सपनेहु अगम परमारथ परवेश। राम नाम सुमिरत मिटहिं तुलसी कठिन कलेश ॥ १७ ॥ मोर २ सब कह कहसि तू को कहु निजनाम। कै चुप साधहि सुन समुझि कै तुलसी जपुराम ॥ १८ ॥ हम लखू हमहिं हमार लखु हम हमार के बीच। तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जपु नीच ॥ १९ ॥ राम नाम अवलम्ब बिनु परमारथ की आश। बर्षत बारिद बूंद गहि चाहत चढ़न अकाश ॥ २० ॥ तुलसी हठि हठि कहत नित चित सुन हितकर मान। लाभ राम सुमिरन बड़ी बड़ी बिसारे हान ॥ २१ ॥ बिगरी जन्म अनेक की सुधरै अबहीं आज। होहि राम की राम जपु तुलसी तजि कुसमाज ॥ २२ ॥ प्रीति

प्रतीति सुरीति सों रामनाम जपु राम। तुलसी तेरो है भलो आदि मध्य परिनाम ॥ २३ ॥ दम्पति रस रसना दशन परिजन बदन सगेह। तुलसी हर हित बरण शिशु सम्पति सहज सनेह ॥ २४ ॥ वर्षारितु रघुपति भगति तुलसी शालि सुदास। राम नाम बर बरण जग सावन भादों मास ॥ २५ ॥ राम नाम नरकेशरी कनककशिपु कलिकाल। जापक जन प्रहलाद जिमि पालहिं दल सुरसाल ॥ २६ ॥ रात नाम कलिकाल तरु सकल सुमङ्गलकन्द। सुमिरन करतलसिद्धि सब पगपग परमानन्द ॥ २७ ॥ राम नाम कलिकामतरु रामभक्ति सुरधेनु। सकल सुमङ्गल मूल जग गुरुपद पङ्कज रेनु ॥ २८ ॥ यथा भूमि बस बीज में नखत निवास अकाश। राम नाम सब धरममय जानत तुलसीदास ॥ २९ ॥ सकल कामनाहीन जे राम भक्ति रस लीन। नाम प्रेम पीयूष हृद तिनहुँ किये मन मीन ॥ ३० ॥ ब्रह्मराम ते नाम

बड़ बरदायक बरदान। राम चरित शतकोटि महँ लिय महेश जिय जाने ॥ ३१ ॥ शवरी गीध सुसेवकन सुगति दीन रघुनाथ। नाम उधारे अमित लख वेद विदित गुण गाथ ॥ ३२ ॥ राम नाम पर रामते प्रीति प्रतीत भरोस । सो तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगलकोस ॥ ३३ ॥ लंक बिभीषण राज कपि पति मारुत खग मीच । लही राम सो नाम रति चाहत तुलसी नीच ॥ ३४ ॥ हरन अमंगल अघ अखिल करन सकल कल्याण । राम नाम नित कहत हर गावत वेद पुराण ॥ ३५ ॥ तुलसी प्रीति प्रतीतिसों राम नाम जपु जागु । किये होय विधि दाहिनो देइ अगेही भागु ॥ ३६ ॥ जल थल नभगति अमित अति अग जग जीव अनेक । तुलसी तोहिसे दीन को राम नाम गत एक ॥ ३७ ॥ राम भरेसो राम बल राम नाम निश्वास। सुमिरि नाम मंगल कुशल मांगत तुलसीदास ॥ ३८ ॥ राम नाम रति

रामगति राम नाम निश्वास । सुमिरत शुभमंगल कुशल चहुँ दिशि तुलसीदास ॥ ३९ ॥ रसना सांपिनि बदन बिल जे न जपहि हरिनाम । तुलसी प्रेम न रामसों ताहि बिधाता बाम ॥ ४० ॥ हिय फाटहु फूटहु नयन जरउ ते तन केहिकाम । द्रवहिं स्रवहिं पुलकहिं नहीं तुलसी सुमिरत राम ॥ ४१ ॥ रामहिं सुमिरत रण भिरत देत परत गुरुपाय । तुलसी जिनहिं न पुलक तन ते जग जीवत जाय ॥ ४२ ॥

सो०–हृदय सो कुलिश समान जो न द्रवहिं हरिगुण सुनत । करन रामगुण गान जीह सो दादुर जीह सम ॥ ४३ ॥ स्रवै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुबीर यश । ते नैना जनिदेहु राम करहु बरु आंधरे ॥ ४४ ॥ रहै न जलभरि पूरि रामसुयश सुन रावरी । तिन आंखिनमें धूरि भर भर मूठी मेलिये ॥ ४५ ॥ बारक सुमिरत तोहिं होहिं तिनहिं सनमुख सदा । क्यों न सम्हारहिं मोहिं दयासिंधु समरत्थके ॥ ४६ ॥

साहिब होत सरोष सेवक को अपराध सुनि । अपने देखे दोख राम न कबहूं उर धरे ॥ ४७ ॥

दो०-तुलसीरामहिं आपुते सेवककी रुचि मीठि । सीतापति से साहिबहि कैसे दीजै पीठि ॥ ४८ ॥ तुलसी जाके होयगी अंतर बाहर दीठि । सो क्यों कृपालहि देइगो केवट पालहि पीठि ॥ ४९ ॥ प्रभु तरुतर कपि डार पर कीन्हे आपु समान । तुलसी कहूं न रामसों साहिब शीलनिधान ॥ ५० ॥ रे मन सबसों निरसकै सरस राम सों होहि । भलो सिखावन देत है निशिदिन तुलसी तोहि ॥ ५१ ॥ हरे चरहिं तापहि बरे फरे पसारहिं हाथ । तुलसी स्वारथ मीत सब परमारथ रघुनाथ ॥ ५२ ॥ स्वारथ सीताराम सों परमारथ सियराम । तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहाकछु काम ॥ ५३ ॥ स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एकही ओर । द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥ ५४ ॥ तुलसी स्वारथ रामहित परमारथ रघुबीर । सेवक जाके

लषण से पवन तनय रणधीर ॥ ५५ ॥ ज्यों जगबैरी मीन को आपु सहित परिवार। त्यों तुलसी रघुबीर बिनु गति आपनी विचार ॥ ५६ ॥ रामप्रेम विन दूबरो रामप्रेमही पीन। रघुबर कबहुं करहिंगे तुलसी ज्यों जलमीन ॥ ५७ ॥ राम सनेही राम गति रामचरण रति जाहि। तुलसी फल जग जन्मको दिये विधाता ताहि ॥ ५८ ॥ आपु आपनेते अधिक जेहि प्रिय सीताराम। तेहिके पगकी पानहीं तुलसी तन को चाम ॥ ५९ ॥ स्वारथ परमारथ रहित सीताराम सनेह। तुलसी सों फल चारको फल हमार मत एह ॥ ६० ॥ जे जन रूखे विषयरस चिकने रामसनेह। तुलसी ते प्रिय रामको कानन बसहिं कि गेह ॥ ६१ ॥ यथालाभ संतोष सुख रघुबर चरण सनेह। तुलसी ज्यों मन मूढ़ सों जसकानन तसगेह ॥ ६२ ॥ तुलसी जोपै रामको नाहिंन सहज सनेह। मूड़ मुड़ायो बादिही भांड़ भये तजि गेह ॥ ६३ ॥ तुलसी श्रीरघुबीर तजि करे भरोसी

और। सुख संपति की कामली नरकहु नाहीं ठौर॥६४॥ तुलसी परि हरि हरि हरहि पांवर पूजहि भूत। अंत फजीहत होहिंगे ज्यों गनिका के पूत ॥ ६५॥ सेये सीता राम नहिं भजे न शंकर गौरि । जन्म गँवायो वादिही रटत पराई पौरि ॥ ६६ ॥ तुलसी हरि अप-मान ते होइ अकाज समाज । राज करत रज मिल गये सदल सकुल कुरुराज ॥ ६७॥ तुलसी रामहिं परि हरे निपट हानि सुनिबेउ । सुरसरिगत सोई सलिल सुरासरिस गंगेउ ॥ ६८ ॥ रामदूरि मायाबढ़ति घटत जान मन मांह । धूरिहोति रबि दूरि लखि शिरपर पगतरछांह ॥ ६९ ॥ साहिब सीता नाथसों जबघटि है अनुराग । तुलसी तबही भालते भभरि भागिहैभाग ॥ ७० ॥ करिहौ कोशलनाथतजि जबहीं दूसरि आस । जहां तहां दुख पाइहौ तबहीं तुलसी दास ॥ ७१ ॥ बिंध-नईंधन पायये सागर जुरै न नीर। परै उपास कुबेरघर जो बिपक्षरघुबीर ॥ ७२ ॥ बर्षाको गोबर भयो को चहै

को करै प्रीति। तुलसी तू अनुभवहि अब रामविमुख की रीति ॥ ७३ ॥ सबहि समरथहि सुखद प्रिय अच्छम प्रिय हितकारि। कबहु न काहुहि रामपै तुलसी कहा विचारि ॥ ७४ ॥ तुलसी उद्यम करमयुग तब जहँ राम-सुदीठि। होइसुफल सोइ ताहि सब सन्मुख प्रभु तन पीठि ॥ ७५ ॥ प्रेम काम तरु परिहरत सेवत कलि तरु ठूंठ। स्वारथ परमारथ चहत सकल मनोरथ झूंठ ॥ ७६ ॥ निज दूषण गुण रामके समुझे तुलसी दास। होय भलो कलिकालहू उभय लोक अनयास ॥ ७७ ॥ कैतोहि लागैं राम प्रिय कै तू प्रभुप्रिय होहि। द्वै महँ रुचै जो सुगम सो कीबै तुलसी तोहि ॥ ७८ ॥ तुलसी द्वै महँ एकही खेल छांड़ि छल खेलु। कै करु ममता रामसों कै ममता पर हेलु ॥ ७९ ॥ निगम अगम साहेब सुगम राम साचिलो चाह। अम्बु अशन अवलोकियत सुलभ सबै जगमाह ॥ ८० ॥ सम्मुख आवत पथिक ज्यों दिये दाहिना वाम। तैसोइ होत

सु आपकी त्योंही तुलसीराम ॥ ८१ ॥ राम प्रेमपथमों बये दिये विषय तनपीठि । तुलसी केचुलि परिहरें होत सांपहू दीठि ॥ ८२ ॥ तुलसी जौलौं विषय की सुधा माधुरी मीठ । तौलौं सुधा सहस्रसम राम भगत सुठसीठ ॥ ८३ ॥ जैसो तैसो रावरो केवल कोशल पाल । तौ तुलसीको है भलो तिहूँलोक तिहुँकाल ॥ ८४ ॥ है तुलसी के एक गुण अवगुण निधि कहैं लोग । भलो भरोसो रावरो राम रीझिबे योग ॥ ८५ ॥ प्रीति राममों नीतिपथ चलियराम रिस जीति । तुलसी संतनके मते इहै भक्तिकी रीति ॥ ८६ ॥ सत्य बचन मानस बिमल कपट रहित करतूति । तुलसी रघुबर सेवकहि सकै न कलियुग धूति ॥ ८७ ॥ तुलसी सुख जो राम सो दुखी सो निज करतूति । करम बचन मन ठीक जेहि तेहि न सकै कलि धूति ॥ ८८ ॥ नातों नाते रामके राम सनेह सनेहु । तुलसी मांगत जोरिकर जन्म जन्म बिधिदेहु ॥ ८९ ॥

सब साधन को एक फल जेहि जानै सोइ जान।
ज्यों त्यों मन मन्दिर बसहिं रामधरे धनुबान ॥ ६० ॥
जो जगदीश तो अति भलो जो महीश तौ भाग ॥
तुलसी चाहत जन्मभरि रामचरण अनुराग ॥ ६१ ॥
परहु नरक फल चारि शिशु मीचडाकिनी खाउ
तुलसी रामसनेह को जो फल सो जरिजाउ ॥ ६२ ॥
हितसों हित रतिरामसों रिपुसो बैर बिहाउ। उदासीन सबसों सरल तुलसी सहज स्वभाउ ॥ ६३ ॥ तुलसी ममता रामसों समता सब संसार। राग न रोग न दोष दुख दास भये भवपार ॥ ६४ ॥ रामहि डरुकरु रामसों ममता प्रीति प्रतीत । तुलसी निरुपधि राम को भये हारि हूं जीति ॥ ६५ ॥ तुलसी राम कृपाल सों कहि सुनाउ गुण दोप। होय दूबरी दीनता परम-पीन संतोष ॥ ६६ ॥ सुमिरण सेवा रामसों साहब सों पहिचान। ऐसहु लाभ न ललक जो तुलसी नित हित हान ॥ ६७ ॥ जाने जानन जोइये बिनु

जाने को जान । तुलसी यह सुनि समुझि हिय आ-
निधरे धनुबान ॥ ९८ ॥ करमठ कठमलिया कहैं ज्ञानी
ज्ञान बिहीन । तुलसी त्रिपथ बिहायगो राम दुआरे
दीन ॥ ९९ ॥ बाधकसब सब के भये साधक भये न
कोइ । तुलसी राम कृपालते भली होय सो होय ॥
१०० ॥ शंकर प्रिय ममद्रोही शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्पभरि घोर नरक महँ बास ॥ १०१ ॥
बिलग २ सुख संग दुख जियन मरण सोइ रीति।
रहे ते राखे रामके गये ते उचित अनीति ॥ १०२ ॥
जाय कहब करतूति बिनु जाय योग बिनु क्षेम । तु-
लसी जाइ उपाय सब बिना रामपद प्रेम ॥ १०३ ॥
लोगभँगतु सबयोगही योग जाय बिनुक्षेम । त्यों तु-
लसी के भाव गतु रामप्रेम बिनु नेम ॥ १०४ ॥ राम
निकाई शवरी है सबहीको नीक । जो यह सांची है
सदा तो नीको तुलसीक ॥ १०५ ॥ तुलसी राम जो
आदरो खोटो खरो खरोइ । दीपक काजर शिरधरो

धरो सुधरो धरोइ ॥ १०६ ॥ तन बिचित्र कायर बचन अहि अहार मन घोरि । तुलसी हरि भये पक्षधर ताते कह सब मोर ॥ १०७ ॥ लहै न फूटी कौड़िहू को चाहै क्यहि काज । सो तुलसी महँगो कियो राम गरीबनिवाज ॥ १०८ ॥ घर घर मांगे टूक पुनि भूपति पूजे पायँ । ते तुलसी सब रामबिनु ते अब राम सहायँ ॥ १०६ ॥ तुलसी राम सुदीठि ते निबल होत बलवान । बालि बैर सुग्रीव के कहा कियो हनुमान ॥ ११० ॥ तुलसी रामहिते अधिक रामभक्ति जिय जान । ऋणियां राजाराम सो धनी भयो हनुमान ॥ १११ ॥ कियो सो सेवक धर्म कपि प्रभु कृतज्ञ जिय जान । जोरि हाथ ठाढ़ेभये बरदायक बरदान ॥ ११२ ॥ भक्तभये भगवान प्रभु राम धरो तनु भूप । किय चरित्र पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥ ११३ ॥ ज्ञान गिरा गोतीत अज माया गुणगोपार । सोइ सच्चिदानन्दघन करत चरित्र उदार ॥ ११४ ॥ हिर०

एयाक्ष भ्रातासहित मधुकैटभ वलवान । ज्यहि मारे सो अवतऱ्यो कृपासिंधु भगवान ॥ ११५ ॥ शुद्ध सच्चिदानन्दमय कन्द भानुकुलकेतु । चरित करत नर अनुहरत संसृतसागरसेतु ॥ ११६ ॥ वाल विभूषण वसन वर धूरि धूसरित अङ्ग । बाल केलि रघुबर करत बाल बन्धु सब सङ्ग ॥ ११७ ॥ अनुदिन अवध बधावने नित नव मङ्गल मोद । मुदित मातु पितु लोगलखि रघुबर बालबिनोद ॥ ११८ ॥ राज अजिर राजत रुचिर कोशल पालक बाल । जानु पाणिचर चरितवर सगुण सुमङ्गलमाल ॥ ११९ ॥ नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ । ललित बसन भूषण ललित ललित अनुज शिशु साथ ॥ १२० ॥ राम भरत लक्ष्मण ललित शत्रुशमन शुभनाम । सुमिरत दशरथसुवन सब पूजहि सब मन काम ॥ १२१ ॥ बालक कोशल पाल के सेवक बाल कृपाल । तुलसी मन मानस बसत मङ्गल मञ्जु मराल ॥ १२२ ॥ भक्त

भूमि भूसुर सुरभि सुरहित लागि कृपाल। करतचरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जञ्जाल ॥ १२३ ॥ निज इच्छा प्रभु अवतरै सुर गो द्विज हित लागि। सगुण उपासक सङ्ग तहँ रहे मोक्ष सब त्यागि ॥ १२४ ॥ परमानन्द कृपायतन मन परिपूरणकाम। प्रेम भक्ति अनपावनी हमहिं देहु श्रीराम ॥ १२५ ॥ वारिमथे घृत होय बरु सिकताते बरु तेल। बिनु हरिभजन न भव तरै यह सिद्धान्त अपेल ॥ १२६ ॥ हरिमाया कृत दोष गुण बिनु हरि भजन न जाहिं। भजियराम सब काम तजि अस विचारि मनमाहिं ॥ १२७ ॥ जो चेतनकहँ जड़ करै जड़ै करहिं चैतन्य। अस समरथ रघुनायकहिं भजहिं जीव ते धन्य ॥ १२८ ॥ श्री रघुबीर प्रताप ते सिन्धुतरे पाषान। ते मतिमन्द जे राम तजि भजहिं जाय प्रभु आन ॥ १२९ ॥ लवनिमेष परमानु युग वर्ष कल्प शरचण्ड। भजहिं न मन त्यहि रामकहँ काल जासु को दण्ड ॥ १३० ॥ तबलगि

कुशल न जीवकहँ सपन्यहुँ मन बिश्राम । जबलगि भजत न रामपद शोकधाम तजि काम ॥ १३१ ॥
बिनु सतसङ्ग न हरिकथा त्यहि बिनु मोह न भाग । मोह गये बिनु रामपद होय न दृढ़ अनुराग ॥ १३२ ॥
बिनु बिश्वासै भक्ति नहिं त्यहि बिनु द्रवहिं न राम । राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्राम ॥ १३३ ॥
सो०—अस बिचारि मन धरि तजि कुतर्क संशय सकल । भजहु राम रघुबीर करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ १३४ ॥ भाववश्य भगवान सुखनिधान करुणाभवन । तजि ममता मद मान भजिय सदा सीतारमन ॥ १३५ ॥ कहहिं बिमलमत सन्त वेद पुराण बिचारिसब । द्रवैं जानकीकन्त तब छूटै संसारदुख ॥ १३६ ॥
बिन गुरुहोइ न ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु । गावहिं वेदपुरान सुख कि लहिय हरिभक्तिबिनु ॥ १३७ ॥
दो०—रामचन्द्र के भजन बिनु जो चह पद निर्व्वान । ज्ञानवन्त अपि सो नर पशु बिन पूछ बिषान ॥

१३८ ॥ जरो सो सम्पति सदन सुख सुहद मातु पितु भाइ । ससुख होत जो रामपद करै न सहज सहाइ ॥ १३९ ॥ सोइ साध मुनि समुझिकर रामभक्ति थिरताइ । लड़िकाईं को पेरिबो तुलसी बिसरि न जाइ ॥ १४० ॥ सबै कहावत रामके सबहि रामकी आस । राम कहैं ज्यहि आपनो त्यहिभजु तुलसीदास ॥ १४१ ॥ ज्यहि शरीर रति रामसों सोइ आदरे सुजान । रुद्र देह तजि नेह बश बानरभे हनुमान ॥ १४२ ॥ जानि राम सेवा सरस समुझि करब अनुमान । पुरिखाते सेवक भये हरते भे हनुमान ॥ १४३ ॥ तुलसी रघुबर सेवकहि खलढाढ़स मनमाँख । बाजराज के बालकहिं लवा दिखावत आँख ॥ १४४ ॥ रावण रिपुके दाससों कायर करहिं कुचालि । खरदूषण मारीच ज्यों नीच जाहिंगे कालि ॥ १४५ ॥ पुण्य पाप यश अयशके भावी भाजन भूरि । सङ्कट तुलसीदास को राम करहिंगे दूरि ॥ १४६ ॥ खेलत बालक ब्याल सँग मेलत पावक हाथ ।

तुलसी शिशु पितु मातु ज्यों राखत सियरघुनाथ १४७॥ तुलसी दिन भल शाह कहँ भली चोर कहँरात। निशि बासर ताकहँ भलो मानै रामहि नात ॥१४८॥ तुलसी जन निज सुनि समुझि कृपासिन्धु रघुराज। महँगे मणि कञ्चन किये सोंधो जग जल नाज ॥ १४९ ॥ सेवा शील सनेह वश सुखद सुयोग वियोग। तुलसी ते सब रामसों सुखद सुयोग वियोग ॥ १५० ॥ चारि चहत मनसा अगम चनक चारिको लाहु। चारि परिहरे चारिको दानि चारि चखचाहु॥ १५१॥ सूधे मन सूधे वचन सूधी सब करतूति। तुलसी सूधी सकल विधि रघुबर प्रेम प्रसूति ॥१५२॥ विप विद बोलनि मधुर मन कटु कर हृदय मलीन। तुलसी राम न पाइये भये विपय जल मीन ॥१५३॥ वचन वेपते जो बनै सो बिगरै परिणाम। तुलसी मन ते जो बनै बनी बनाई राम ॥ १५४॥ नीच मीच लै जाइ जो राम रजायसु पाइ। तो तुलसी तेरो भलो नत अनभलो अ-

घाइ ॥ १५५ ॥ जातिहीन अघ जन्ममहि मुक्ति कीन
असि नारि । महामन्द मन सुख चहहिं ऐसे प्रभुहि
बिसारि ॥ १५६ ॥ बन्धु बधूरत क्यहि कियो वचन निरु-
त्तर बालि । तुलसीप्रभु सु गरीव की चितै न कछू कु-
चालि ॥ १५७ ॥ बालिबली बलशालिदल सखा कीन्ह
कपि राज । तुलसी रामकृपाल को विरद गरीब नि-
वाज ॥ १५८ ॥ कहा बिभीपण लै मिलो कहा बिगारी
बालि । तुलसी प्रभु शरणागतहि सब दिन आयो
पालि ॥ १५९ ॥ तुलसी कोशलपालसों को शरणागत
पाल।भजों विभीषणबन्धुमय भंज्योदारिदकाल १६०॥
कुलिशहुचाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
चित खगेस अस राम कर समुझिपरै कहु काहि॥१६१॥
बलकल भूषण फल अशन बिनु शय्या द्रुमप्रीति ।
तेहि समय लंका दई यह रघुबर की रीति ॥ १६२ ॥
जो संपति शिवरावणहि दीनदिये दसमाथ । सोइ सं-
पदा विभीषणहि सकुचि दीन रघुनाथ॥ १६३ ॥ अवि-

चलराज बिभीषणहि देहि रामरघुराज । अजहु बि-
राजत लंकपर तुलसी सहित समाज ॥ १६४ ॥ कहा
बिभीषण लै मिल्यो कहा दियो रघुनाथ । तुलसी यह
जाने बिना मूढ़ मीजिहहि हाथ ॥ १६५ ॥ बैरिबन्धु
निशिचर अधम तजो न भरे कलंक । झूठ अर्थ सि-
यपारिहरी तुलसी सोय अशंक ॥ १६६ ॥ त्यहि समाज
कियो कठिनपन जेहि तौल्यो कैलास । तुलसी प्रभु
महिमा कहौं सेवक को बिश्वास॥ १६७ ॥ सभा सभा
सद निरखिपट पकरि उठाये हाथ । तुलसी किये इगा-
रहौ बसन बेष यदुनाथ ॥ १६८ ॥ त्राहि तीन कहि
द्रौपदी तुलसीराजसमाज । प्रथम बढ़े पटचित विकल
चहत चकित निज काज ॥ १६६ ॥सुखजीवन सबकोउ
चहत सुखजीवन हरि हाथ । तुलसी दाता मांगन्यो
द्यखियत अबुध अनाथ ॥१७० ॥ कृपणदेइ पाइयपरो
बिनसाधन सिधि होय । सीतापति सन्मुख समुझि
जो कीजै शुभ सोय ॥१७१॥ दण्डकबन पावन करन

चरणसरोज प्रभाउ । ऊसर जामहि खल तरहि होहि रंकतेराउ ॥ १७२ ॥ बिनही ऋतु तरुवर फरहिं शिला द्रवहिं जल जोर । रामलषण सिय करिकृपा जब चितवहिं जेहि ओर ॥ १७३ ॥ शिला सो तिय भइ गिरि तरे मृतक जिये जग जान । राम अनुग्रह सगुन शुभ सुलभ सकल कल्यान ॥ १७४ ॥ शिलाशाप मोचन चरण सुमिरहु तुलसीदास । तजहु सोच संकट मिटहिं पूजहिं मनकी आस ॥ १७५ ॥ मरे जिआये भालुकपि अवध विप्रको पूत । सुमिरहु तुलसी ताहि तू जाको मारुत दूत ॥ १७६ ॥ काल करम गुणदोष जग जीव तिहारे हाथ । तुलसी रघुबर रावरो जान जानकी नाथ ॥ १७७ ॥ रोगनिकर तनु जरठपन तुलसी सँग को लोग।रामकृपालय पालिये दीनपालिबे योग १७८॥ मो सम दीन न दीन हित तुमसमान रघुबीर । अस बिचारि रघुवंशमणि हरहु बिषम भव-भीर ॥ १७९ ॥ भवभुवंग तुलसी नकुल डसत ज्ञान हरिलेत । चित्र

कूट इक औषधी चितवत होत सचेत॥ १८०॥ हौंहु कहावत सब कहत राम सहत उपहास। साहब सीताराम सो सेवक तुलसीदास॥१८१॥ रामराज राजत सकल धरम निरत नरनारि। रागन रोपन दोष दुख सलभ पदारथ चारि॥ १८२॥ रामराज संतोषसुख घर वन सकल सुपास। सुरतरु तरु सुरधेनु महि अभिमत भोग बिलास॥ १८३॥ खेती बणि विद्या बणिज सेवा शिल्प सो काज। तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफल रामके राज॥ १८४॥ दण्ड यतिन कर भेद जहँ नरतक नृत्यसमाज। जीतहु मनहि न सुनिय अस रामचन्द्र के राज॥ १८५॥ कोपे शोचत पीच कर करिय निहारन काज। तुलसी परमित प्रीतिकी रीति राम के राज॥ १८६॥ मुकुर निरखि मुख रामभ्रू गनत गुनहिं दै दोष। तुलसी से शठ सेवकनि लखि निज परहि सरोप॥ १८७॥ सहस नाम सुनि भनित सुनि तुलसी बल्लभ नाम। सकुचत हिय हँसि

निरखि सिय धरम धुरन्धर राम ॥ १८८ ॥ गौतम ति-
यगति सुरति करि नहिं परसति पग पानि । हिय हर्षे
रघुवंशमणि प्रीति अलौकिक जानि ॥ १८९ ॥ तुलसी
विलसत नखत निशि शरद सुधाकर साथ । मुक्ताझा-
लर झलक जनु राम सुयश शिशु हाथ ॥ १९० ॥ रघुपति
कीरति कामिनी क्यों कहै तुलसीदास । शरद प्रकाश
अकाश छवि चारु चिबुक तिल जास ॥ १९१ ॥
प्रभु गुण गण भूषण बसन विशद विशेष सुदेश ।
राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतब केश ॥ १९२ ॥
राम चरित राकेश पर सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित हितविशेष बड़लाहु ॥ १९३ ॥
रघुवर कीरति सज्जननि शीतल खलनि शुताति ।
ज्यों चकोर चप चकवनि तुलसी चांदनि राति ॥ १९४ ॥
राम कथा मन्दाकिनी चित्रकूट चित चारु । तुलसी
सुभग सनेह वन सिय रघुवीर विहारु ॥ १९५ ॥ श्याम
सुरभिपय विशद अति गुनद करहि सबपान । गिराग्राम

सियरामयश गावहिं सुनहिं सुजान॥१९६॥हरिहरयश सुरनर गिरन्ह वर्णहिं सुकबि समाज। हाटी हाटक घटित चरु रांधें स्वाद सुनाज ॥१९७॥ तिलपर राख्यो सकल जग विदित बिलोकत लोग। तुलसी महिमा रामकी कोउ न जानिबे योग ॥ १९८ ॥

सो०—राम स्वरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर। अबिगति अकथअपार नेति२नित निगमकह॥१९९॥

दो०—माया जीव सुभाव गुण काल करम महदाद। ईश अंकते बढ़त सभ ईशअंक बिनुबाद ॥ २०० ॥ हित उदास रघुबर बिरह बिकल सकल नरनारि। भरत लषण सिय गति समुझि प्रभुचष सदा सुबारि ॥ २०१ ॥ सीय सुमित्रा सुवन गति भरत सनेह सुभाउ। कहिबेको शारद सरस जनिबेको रघुराउ॥२०२॥ जानहिं राम न कहिसकैं भरतलषन सिय प्रीति। समुझि सो सुनि तुलसी कहत हठ शठताकी रीति॥२०३॥ सब बिधि समरथ सकल कहि सहिसांसन दिनराति।

भलो निबाहो सुनि समुझि स्वामि धर्म सब भांति ॥ २०४ ॥ भरतहि होइ न राज मद बिधि हरिहर पदपाइ । कबहुंक कांजी सीकरनि क्षीर सिन्धु बिनसाइ ॥ २०५ ॥ संपति चकई भरतचक मुनि आयसु खिलवार । तिहि निशि आश्रम पींजरा राखैभा भिनुसार ॥ २०६ ॥ सधन चोरसँग मुदितमन धनीगहै ज्यों फेंट । त्यों सुग्रीव बिभीषणहि भई भरतकी भेंट ॥ २०७ ॥ रामसराहे भरतउठि मिलेराम समजानि । तदपि बिभीषण कीशपति तुलसीगरनगलानि ॥२०८॥ भरतश्याम तन रामसम समगुण रूपनिधान । सेवक सुखदायक सुलभ सुमिरत सब कल्यान ॥ २०९ ॥ लसत लषन मूरति मधुर सुमिरहु सहित सनेह । सुख सम्पति कीरति बिजय सगुण सुमंगल गेह ॥ २१० ॥ नाम शत्रुसूदन सुभग सुखमाशील निकेत । सेवत सुमिरत सुलभसुख सकल सुमंगल देत ॥ २११ ॥ कौशल्या-कल्याणमय मूरति करत प्रणाम । शकुन सुमं-

गल काजशुभ कृपाकरहिं सियराम ॥ २१२ ॥ सुमिरि सुमित्रा नाम जग जे तिय लेहिं सुनेम । सुवनलपन रिपुदमन से पावहिं पति पदप्रेम ॥ २१३ ॥ सीता चरण प्रणामकरि सुमिरि सुनाम सुनेम । सो तिय होहि पतिदेवता प्राणनाथ प्रिय प्रेम ॥ २१४ ॥ तुलसी केवल कामतरु राम चरित्र अराम । कलितरु कपि निश्चर कहत हमहि किये विधि बाम ॥ २१५ ॥ मातु सकल सानुज भरत गुरु पुरलोग सुभाउ । देखत २ केकयिहि लंकापति कपिराउ ॥ २१६ ॥ सहजसरल रघुबीर बचन कुमति कुटिलकरि जान । चले जोंक जिमि वक्र गति यद्यपि सलिल समान ॥ २१७ ॥ दश-रथ नाम सुकामतरु फलैसकल कल्यान । धरणिधाम धन धरमसुत सद्गुणरूप निधान ॥ २१८ ॥ तुलसी जान्यो दशरथहि धर्म न सत्य समान । राम तजे ज्यहि लागिवत आपु परिहरे प्रान ॥ २१९ ॥ राम बिरह दशरथमरण मुनि मन अगम सुमीचु । तुलसी

मंगल मरणतरु शुचि सनेह जल सींचु ॥ २२० ॥

सो०—जीवन मरण सनाम जैसे दशरथ रायको । जियत खिलाये राम राम विरह तनु परिहरेउ ॥ २२१ ॥

दो०—प्रभुहि विलोकत गीध गति सिय हित घायल नीचु । तुलसी पाई गीधपति मुक्ति मनोहर मीचु ॥ २२२ ॥ विर्त कर्म्मरत भरत मुनि सिद्ध ऊंच अरु नीच । तुलसी सकल सिहात सुनि गीधराजकीमीच ॥ २२३ ॥ मुये मरत मरिहै सकल घरीपहरके बीच । लही न काहू आज लौं गीधराज की मीच ॥ २२४ ॥ मुये मुक्त जीवत मुकत मुकत मुक्तहू बीच । तुलसी सबही ते अधिक गीधराज की मीच ॥ २२५ ॥ रघुबर विकल विहङ्ग लखि सो बिलोकि दोउ वीर । सियसुधि कहि सिय राम कहि तजी देह मति धीर ॥ २२६ ॥ दशरथते दशगुण भगति सहे तासु करकाज । शोचत वंधु समेत प्रभु कृपासिंधु रघुराज ॥ २२७ ॥ केवट निशिचर विहँगमृग किये साधु सनमानि । तुलसी

रघुबरकी कृपा सकल सुमंगल खानि ॥ २२८ ॥ मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुतपूत । सकल सिद्ध कर कमलतल सुमिरत रघुबरदूत ॥ २२९ ॥ धीरवीर रघुवीर प्रिय सुमिरि समीर कुमार । अगम सुगम सब काजकर करतल सिद्धि बिचार ॥ २३० ॥ सुखमुदमंगल कुमुद विधु सगण सरोरुहभानु । करहु काज सबसिद्धि शुभ आनि हिये हनुमान ॥ २३१ ॥ सकल काज शुभसमउ भल सगुण सुमंगल जानु । कीरति विजय विभूति भलि-हिय हनुमानहिं आनु ॥ २३२ ॥ शूरसिरोमणि साहसी सुमति समीर कुमार । सुमिरत सब सुख संपदा मुदमंगल दातार ॥ २३३ ॥ तुलसी तन सर सुख जलज भुज रुज गजबरजोर । दलत दयानिधि देखिये कपि केशरी किशोर ॥ २३४ ॥ भुजतरु कोटर रोग अहि बरबश कियो प्रवेश । बिहँगराज बाहन तुरत काढ़िय मिटै कलेश ॥ २३५ ॥ बाहु बिटप सुख विहँग थल लगी कुपीर कुआगि ।

रामकृपा जल सींचिये वेगि दीन हितलागि ॥२३६॥

सो०—मुक्तिजन्म महिजानि ज्ञानखानि अघहानि कर। जहँ वस शंभुभवानि सो काशी सेइय कसन॥ २३७॥ जरत सकल सुरवृन्द विषमगरल जेहि पान किय। तेहि न भजसि मतिमन्द को कृपाल शंकर सरिस॥ २३८॥ दो० वासर ठासनि के ठका रजनी चहुँदिशि चोर। शंकर निजपुर राखिये चितै सुलोचनकोर॥ २३९॥ अपनी बीसो आपुही पुरिहि लगाये हाथ। क्यहि विधि विनती विश्व की करै विश्वके नाथ॥ २४०॥ और करै अपराध कोइ और पाव फल भोग। अति विचित्र भगवंत गति कोउ न जानिबे योग॥ २४१॥ प्रेमसरी परपंच रुज उपजी अधिक उपाधि। तुलसी भलो सुवेदई वेगि बांधिये व्याधि॥ २४२॥ हम हमार आचार वड़ भूरि भारधर शीश। हठि शठ परवश परत जिमि करी कोश कृमि कीश॥ २४३॥ क्यहि मग प्रविशत जा-

छताय अघाय उर अवशि होइ हितहानि ॥४२१॥ मरु हाये नट भाट के चपरि चढ़े संग्राम । कैवे भाजैं आय हैं कै बांधे परिणाम ॥४२२॥ लोकरीति फूटीसहै आंजी सहै न कोइ । तुलसी जो आंजीसहै सो आंधरो न होइ॥ ४२३ ॥ माथे भल आड़ेहु भलो भलो न घालेउ घाउ । तुलसी सबके शीश पर रखवारो रघुराउ ॥ ४२४ ॥ सुमति बिचारहिं परिहरहि दल सुमनहुं संग्राम । सकुल गये तनु बिनु भये सांखी यादव काम ॥ ४२५ ॥ कलह न जानब छोट करि कलह कठिन परिणाम । लगति अगिन लघु-नीच गृह जरत धनिक धनधाम ॥ ४२६ ॥ रोष क्षमा के दोष गुण सुनि मनु मानहि सीख । अविचल श्रीपति हरि भये भूसुर लहै न भीख ॥ ४२७ ॥ कौरव पाण्डव जानिये क्रोध क्षमा के सीम । पांचहि मारि न सहि सके सबौं सँहारे भीम ॥ ४२८ ॥ बोलन मोटे मारिये मोटी रोटी मारु । जीति सहज सम-हारिबो जीते हारि निहारु ॥ ४२९ ॥

जो परिपांय मनाइये तासों रूठि विचारि। तुलसीं तहां न जीतिये जहँ जीते है हारि ॥ ४३० ॥ जूझे ते भल बूझिबो भली जीति ते हारि। डहँके ते डह काइबो भलों जो करिय विचारि ॥ ४३१ ॥ जा रिपु सों हारेहु हँसी जिते पाय परितापु। तासों रारि विचारिये समय सम्हारे आपु ॥ ४३२ ॥ जो मधु मरै न मारिये माहुर देइ जो काउ। जग जीते हारे परसु हारि जिते रघुराउ ॥४३३॥ बैरमूलहर हितबचन प्रेम मूल उपकार। दोहा सुभ सन्दोह सी तुलसी क्रिये बिचार ॥४३४॥ रोप न रसना खोलिये वरु खोलिय तरवार। सुनत मधुर परिणाम हित बोलिय बचन विचारि॥४३५॥मधुर वचन कटुबोलिवो विनुश्रम भाग अभाग। कुहूकुहू कलकराठरव काकाकररतकाग॥४३६॥ पेट न फूलत विनु कहे कह तन लागे ढेरु। सुमति बिचारे बोलिये समुझि कुफेरु सुफेरु ॥ ४३७ ॥ छिद्यो न तरुणि कटाक्षशर करेउ न कठिन सनेहु। तुलसी

तिनकी देह की जगतकवच कर लेहु ॥ ४३८ ॥ शूर समर करणी करहिं कहि न जनावहिं आपु। विद्य-मान रणपाय रिपु कायर कथहिं प्रलापु ॥४३९॥ वचन कहै अभिमान के पारथ पेखतु सेतु। प्रभु तिय लूटत नीच नर जय न मीचु तेहि हेतु ॥४४०॥ राम लषण विजयी भये मनहु गरीवनिवाज। मुखर बालि रावण गये घरही सहित समाज ॥ ४४१ ॥ खग मृग मीत पुनीत किय वनहु राम नयपाल। कुमति बालि दश कण्ठघर सुहृद बन्धु किय काल ॥ ४४२ ॥ लखै अ-घाने भूख ज्यों लखैं जीति में हारि। तुलसी सुमति सराहिये मग पग धरै विचारि ॥ ४४३ ॥ लाभ समय को पालिवो हानि समय की चूक। सदा बिचारहिं चारु मति सुदिन कुदिन दिन दूक ॥४४४॥ सिन्धुत-रण कपि गिरिहरण काज सांइ हित दोउ। तुलसी समयहि सम वड़ो बूझत कहँ कोउ कोउ ॥ ४४५ ॥ तुलसी मीठे अमी ते मांगी मिलै जो मीचु। सुधा

सुधाकर समय बिनु कालकूट ते नीचु ॥४४६॥ तुलसी असमयको सखा धीरज धर्म विवेक । साहित साहस सत्यब्रत राम भरोसो एक ॥ ४४७ ॥ समरथ कोउ न रामसों सीयहरण अपराधु । समयहि साधे काज सब समय सराहहि साधु ॥ ४४८ ॥ तुलसी तीरहु के चले समय पाइबो थाह । धाइ न जाइ थहाइबो सर सरिता अवगाह ॥ ४४९ ॥ तुलसी जसि भवितव्यता तैसी मिलै सहाय । आपु न आवै ताहि पै कि ताहि तहां लैजाय ॥४५०॥ कैबूझिबोकैबूझिबो दानकिकाय कलेश।चारिचारुपरलोकपथयथायोगउपदेश॥४५१॥ पात पात को सींचिबो न करु सर्गतरु हेत । कुटिल कटुक फल फरैगो तुलसी करत अचेत ॥ ४५२ ॥ गढ़ि बँधते परतीति बड़ि जेहि सब को सब काज । कहब थोर समुझब बहुत गाड़े बढ़त अनाज ॥ ४५३॥ अपनो सपने कर थपै तिय पूजहिं निज भीत । फलै सकल मनकामना तुलसी प्रीति प्रतीति ॥ ४५४ ॥

ति केहि ज्यों दर्पण में छांह। तुलसी त्यों जग जीवगति करी जीह के नांह॥ २४४॥ सुखसागर सुख नींद वश सपने सब करतार। माया मायानाथ की को जग जाननहार॥ २४५॥ जीव सीव सम सुख शयन सपने कछु करतूति। जागत दीन मलीन सोइ बिकल विषाद बिभूति॥ २४६॥ सपने होय भिखारि नृप रङ्क नाकपतिहोय। जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपञ्च जिय जोय॥ २४७॥ तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समुझत नीच। चपरि चपेटे देत नित केश गहे कर मीच॥ २४८॥ करम खरी कर मोह थल अंक चराचर जाल। हनत गनत गनि गुणि हनत जगत ज्योतिपी काल॥ २४९॥ कहिबे कहँ रसनारची सुनिबे कहँ किय कान। धरिके चित हित सहित सुनि परमारथहिं सुजान॥ २५०॥ ज्ञान कहै अज्ञान बिनु तम बिनु कहै प्रकाश। निरगुण कहै जो सगुण बिनु सो गुरु तुलसीदास॥ २५१॥ अंक अगुण

आखर सगुण समुझि उभय आपार । सोये राखे आप भल तुलसी चारु विचार ॥ २५२ ॥ परमारथ पहिचानि मति लसति विषय लपटानि । निकसि चिता ते अध जरति मानहु सती परानि ॥ २५३ ॥ शीश उघारन किन कहेउ वरजिरहे प्रियलोग । घरही सती कहावती जरती नाहिं वियोग ॥ २५४ ॥ खरिआ खरी कपूर सब उचित न पियतिय त्याग । कै खरिआ मोहि मेलिकै विलम विवेक विराग ॥ २५५ ॥ घरकीन्हे घरु जात है घर छांड़े घर जाइ । तुलसी घर बन बीचही राम प्रेमपुर छाइ ॥ २५६ ॥ दिये पीठि पाछे लगै सन्मुख होत पराय । तुलसी सम्पति छांह ज्यों लखि दिन बैठ गँवाय ॥ २५७ ॥ तुलसी अद्भुत देवता आशा देवीनाम । सेयेशोक समर्पई विमुखभयेअभिराम ॥ २५८ ॥ सोई सेंवर टेसुवा सेवत सदा वसंत । तुलसी महिमा मोहको सुनत सराहत संत ॥ २५९ ॥ करत न समुझत झूठ गुण सुनत होत मतिरङ्क । पारद प्रकट प्रपंच मय

सिद्धिहिनाउ कलङ्क ॥ २६० ॥ ज्ञानी तापस शूर कवि कोविद गुणआगार । कहिकै लोभ विडम्बना कीन्ह न यहि संसार ॥ २६१ ॥ श्री मद वक्र न कीन केहि प्रभुता वधिर न काहि । मृगनयनी के नयन शर को अस लागि न जाहि ॥ २६२ ॥ व्यापि रहेउसंसार महँ माया कटक प्रचंड । सेनापति कामादिभट कपट दंभ पाखंड ॥ २६३ ॥ तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ । मुनि विज्ञान सुधाम मन करहिं निमिष महँ क्षोभ ॥ २६४ ॥ लोभके इच्छा दम्भ बल काम के केवल नारि । क्रोध के पुरुष बचन बल मुनिवर कहहिं बिचारि ॥ २६५ ॥ काम कोध लोभादि मद प्रबल मोहको धारि । तिनमहँ अति दारुण दुखद मायारूपी नारि ॥ २६६ ॥ का नहिं पावक जरिसकै का न समुद्र समाइ । कान करै अबलाप्रबल क्यहि जग काल न खाइ ॥ २६७ ॥ जन्म पत्रिका बर्त्ति कै देखहु मनहिं विचारि । दारुण वैरी मचुके बीच वि-

राजति नारि ॥ २६८ ॥ दीपशिखा सम युवति रस मनजनि होसि पतंग । भजहिं रामतजि काममद करहिं सदा सतसंग ॥ २६९ ॥ काम क्रोध मद लोभरत गृहासक्त दुखरूप । ते किमि जानहिं रघुपति मूढ़ परे तमकूप ॥ २७० ॥ ग्रह ग्रहीत पुनि बातवश त्यहि पुनि बिच्छी मार । ताहि पियाई वारुणी कहहु कौन उपचार ॥ २७१ ॥ ताहि की सम्पति सगुण शुभ सपनेहु मन विश्राम । भूत द्रोहरत मोह बस राम विमुख रतिकाम ॥ २७२ ॥ कहत कठिन समुभत कठिन साधन कठिन विवेक । होइ घुनाक्षर न्याय ज्यों पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ २७३ ॥ खल प्रबोधि जग शोध मन को निरोध कुरु शोध । करहि ते फोकट पचि मरहिं सपनेहु सुख न सुबोध ॥ २७४ ॥ सोरठा ॥ कोउ विश्राम कि पाव तात सहज सन्तोष बिनु । चलै कि जल बिनु नाव कोटि यतन पचि पचि मरै ॥ २७५ ॥ सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह

माया प्रबल । अस बिचारि मन माहिं भजिय महामायापतिहि ॥ २७६ ॥ दोहा ॥ एक भरोसो एक बल एक आश विश्वास । एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास ॥ २७७ ॥ जो घन बरषैं समय शिर जो भरि जन्म उदास । तुलसी याचक चातकहि तऊ तिहारी आस ॥ २७८ ॥ चातक तुलसी के मते स्वातिहु पिये न पानि । प्रेम तृषा बाढ़त भला घटे घटैगी कानि ॥ २७९ ॥ रटत २ रसना लटी तृषा सूखि गइ अंग । तुलसी चातक प्रेमको नित नूतन रुचि रंग ॥ २८० ॥ चढ़त न चातक चित कबहुं प्रिय पयोदके दोष । तुलसी प्रेम पयोधि की ताते नाप न जोप ॥ २८१ ॥ बरषि परुष पाहन पयद पंखकरैं टुइ टूक । तुलसी परा न चाहिये चतुर चातकहि चूक ॥ २८२ ॥ उपलबरषि गरजत तरजि डारत कुलिश कठोर । चितौ कि चातक मेघ तजि कबहुं दूसरी ओर ॥ २८३ ॥ पवि पाहन दामिनि गरज झरि झ-

कोर खरि भीभि । रोप न प्रीतम दोष लखि तुलसी रामहि रीझि ॥ २८४ ॥ मान राखिबो मांगिबो पिय सो नित नवनेहु । तुलसी तीनिउ तब फबै जब चातक मतलेहु ॥ २८५ ॥ तुलसी चातकही फबै मान राखिबो प्रेम । वक्र बूंद लखि स्वातिहू निदरि निबाहत नेम ॥ २८६ ॥ तुलसी चातक मांगनो एक एक घनि दानि । देत जो भूभाजनभरत लेत जो घूटक पानि ॥ २८७ ॥ तीनि लोक तिहुँ काल में चातकही के माथ । तुलसी जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ ॥ २८८ ॥ प्रीति पपीहा पयदकी प्रकट नई पहिचानि । याचक जगति कनौउड़ी कियो कनौड़ी दानि ॥ २८९ ॥ नहिंयाचत नहिं संग्रही शीश नाइ नहिं लेइ । ऐसे मानिहि मांगनेहि को वारिद बिन देइ ॥ २९० ॥ किन किन ज्यायो जगतमें जीवन दायक दानि । भयो कनौड़ी याचकहि पयदप्रेम पहिंचानि ॥ २९१ ॥ साधन सांसत सब सहत सबहिं सुखद फल

लाहु। तुलसी चातक जलधि की रीति बूझि बुध काहु॥ २९२॥ चातक जीवनदायकहि जीवन समय सुरीति। तुलसी अलख न लखि परै चातक प्रीति प्रतीति॥ २९३॥ जीव चराचर जहँ लगे है सब को हित मेह। तुलसी चातक मन बस्यो घन सों सहज सनेह॥ २९४॥ डोलत विपुल विहंग वन पियत पोखरन वारि। सुयश धवल चातक नवल तुही भुवन दशचारि॥ २९५॥ मुख मीठे मानस मलिन कोकिल मोर चकोर। सुयश धवल चातक नवल रहेउ भुवन भरि तोर॥ २९६॥ वासवेष बोलनि चलनि मानस मञ्जु मराल। तुलसी चातक प्रेम की कीरति विशद विशाल॥ २९७॥ प्रेम न परखिय पुरुष पंन पयद सिखावन एह। जग कहै चातक पातकी ऊसर बरषै मेह॥ २९८॥ होइ न चातक पातकी जीव न दानिन मूढ़। तुलसी गति प्रहलाद की समुझि प्रेम पथ गूढ़॥ २९९॥ गरज आपनी सबन को गरज

करत उर आनि। तुलसी चातक चतुर भो याचक जानि सुदानि ॥ २०० ॥ चरग चंगुगत चातकहि नेम प्रेम की पीर। तुलसी परवस हाड़पर परि है पुहुमी नीर ॥ २०१ ॥ बँध्यो वधिक पर्‍यो पुण्य जल उलटि उठाई चोंच। तुलसी चातक प्रेमपट परतहु लगी न खोंच ॥ २०२ ॥ अंडफोरि कियो चेटतुख पूरे नीर निहारि। गहि चंगुल चातक चतुर डार्‍यो बाहिर बारि ॥ २०३ ॥ तुलसी चातकदेतसिख सुतहिबारहीबार। तात न तर्पण कीजिये बिना बारिधर धार ॥ २०४ ॥

सो०—जियत न नाई नारि चातक घन तजि दूसरहि। सुरसरि हूं की बारि मरत न मांगेउ अरध जल ॥ २०५ ॥ सुनरे तुलसीदास प्यास पपीहहि प्रेम को। परिहरि चारिउ मास जो अचवै जल स्वाति को ॥ २०६ ॥ याचै बारहमास पियै पपीहा स्वातिजल। जान्यो तुलसीदास जुगवत नेही नेह मन ॥ २०७ ॥

दो०—तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पियास

पियत स्वातिजल जान जग याचक बारहमास॥ ३०८॥
आलबाल मुक्ताहलनि हिय सनेह तरुमूल। होइ हेतु
चित चातकहि स्वाति सलिल अनुकूल॥ ३०९॥
बिबिरसनी तन श्याम है बंकचलनि बिषखानि। तुल
सीयश श्रवणन सुन्यो शीश समर्प्यो आनि॥ ३१०॥
उष्ण काल अरु देह तृषित मगपंथी तन ऊख। चातक
बतियां नारुचे अनजल सींचै रूख॥ ३११॥ अनजल
सींचे रूखकी छायाते बरु घाम। तुलसी चातक बहुत
है यह प्रवीणका काम॥ ३१२॥ एक अङ्ग जो सनेह
ता निशि दिन चातक नेह। तुलसी जासों हितलगै
वहि अहार वो देह॥ ३१३॥ आप व्याधको रूपधरि
कहौ कुरंगहु रागु। तुलसी जो मृगमन मुरै परै
प्रेमपट दागु॥ ३१४॥ तुलसी मन निज घाति फुनहि
व्याधहि देउ दिखाय। बिछुरत होइ न आंधरो ताते
प्रेम न जाय॥ ३१५॥ जरत तुहिन लखि बनज बन
रबिदै पीठि पराउ। उदय बिकस अथवत सकुच मिटै न

सहज सुभाउ ॥ ३१६ ॥ देउ आपने हाथ जल मीनहि माहुर घोरि । तुलसी जिय जो बारि बिनु तौ तुँ देहि कबि खोरि ॥ ३१७ ॥ मकर उरग दादुर कमठ जलजीवन जलगेह । तुलसी एकै मीन के है सांचि लो सनेह ॥३१८॥ तुलसी मिटै न मरि मिटेहु सांचो सहज सनेहु । मेरि शिखावन मूरहूं गरजत पलुहत मेहु ॥ ३१९ ॥ सुलभ प्रीति प्रीतम सबै कहत कहत सबकोइ । तुलसी मीन पुनीतते त्रिभुवन बड़ो न कोइ ॥ ३२० ॥ तुलसी जप तप नेम ब्रत सब सबही ते होइ । लहै बड़ाई देवता इष्टदेव जब होइ ॥ ३२१ ॥ कुदिन हितू सोहित सुदिन हित अनहित किन होइ । शशि छबि हर रवि सदन तउ मित्र कहत सब कोइ ॥ ३२२ ॥ के लघु के बड़े मीत भल सम सनेह दुख सोइ । तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस मिलै महा विष होइ ॥ ३२३ ॥ मान्य मीत सों सुख चहै सों न छुये छल छांह । शशि त्रिशंकु केकयी

गति लखि तुलसी मनमांह ॥ २२४ ॥ कही कठिन कृत कोमलहु हित हठि होइ सहाइ । पलक पानिपर ओड़ि अति समुझि कुघाइ सुघाइ ॥ २२५ ॥ तुलसी बैरं सनेह दोउ रहित विलोचन चारि ॥ सुरहि सेवये आदरहिं निन्दहिं सुरसरि वारि ॥ २२६ ॥ रुचै मांग नेहि मांगिबो तुलसी दानहि दानु । आलस अन-खन आचरज प्रेम पिहानी जानु ॥ २२७ ॥ आमय गारि गारेउ गरल नारि करिय करतार । प्रेम बैर की जननि युग जानहि बध न गँवार ॥ २२८ ॥ सदा न जे सुमिरत रहहिं मिलि न कहैं प्रिय बैन । तापै तिन्ह के जाय घर जिनके हिये न नैन ॥ २२९ ॥ हित पुनीत सब स्वारथहि अरि अशुद्ध बिनु जाड़ । निज मुख मानिक सम दशन भूमि परे ते हाड़ ॥ २३० ॥ माखी काक उलूक बक दादुर से भये लोग । भले ते शुक पिक मोर से कोउ न प्रेम पथ योग ॥ २३१ ॥ हृदय कपट बरवेष धर वचन कहैं गढ़ि छोलि । अबके लोग

मयूर ज्यों क्यों मिलिये मन खोलि ॥ २३२ ॥ चरण चोंच लोचनरँगे चलै मराली चाल । क्षीर नीर बिबरण समै बक उघरत तेहि काल ॥ २३३ ॥ मिलो जो सर लहि सरल है कुटिलन सहज बिहाइ । शीश हेतु ज्यों वक्रगति ब्याल न बिले समाइ ॥ २३४ ॥ कृशधन सखहिं न देव दुख मुयहु न मांगव नीच । तुलसी सज्जन की रहनि पावक पानी बीच ॥ २३५ ॥ संग सरल कुटिलहि भये हरिहर करहि निबाहु । ग्रह गनती गति चतुर विधि कियो उदर बिनु राहु ॥२३६॥ नीच निचाई नहिं तजै सज्जनहूं के संग । तुलसी चन्दन बिटप बसि बिन बिष भये न भुअंग ॥२३७॥ भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच । सुधा सराही अमरता गरल सराही मीच ॥ २३८ ॥ मिथ्या माहुर सज्जनहि खलहि गरल सम सांच । तुलसी छुवत पराय ज्यों पारद पावक आंच ॥ २३९ ॥ सत संगति अपबर्गकर कामी भवकर पंथ । कहहिं साधु

कवि कोविद श्रुति पुराण सब ग्रंथ ॥ २४० ॥ सुकृत न सुकृती परिहरै कपट न कपटी नीच । भरत सिखावन सो दियो गीधराज मारीच ॥२४१॥ सुतरु सुजन वन ऊखसम खल टंकिका रुखान । परहित अनहित लागिसब सांसत हसत समान ॥ २४२ ॥ पियहिं सुमन रस अलि बिटप काटिकोलि फल खात । तुलसी तरुजीवै युगल सुमति कुमति की बात ॥ २४३ ॥ अवसर कौड़ी जो चुकै बहुरि दिये का लाख । दुइज न चंद्रा देखिये उदय कहा भरिपाख ॥ २४४ ॥ ज्ञान अनभलो को सबहि भलो भलेहू काउ । सींग सूंड़ रद मूल नख करत जीव जड़ घाउ ॥ २४५ ॥ तुलसी जगजीवन अहित कतहुं कोउ हित जानि । शोपक भानु कृशानु महि पवन एक घन दानि ॥ २४६ ॥ सुनिय सुधा देखी गरल सब करतूति कराल । जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सुकृत मराल ॥ २४७ ॥ जलचर थलचर गगनचर देव दनुज नर नाग । उ

मध्यम अधम खल दशागुण बढ़त बिहाग ॥ ३४८ ॥
बलिमिस देखे देवता करमिस मानवदेव । मुये मार
अब चारहत स्वारथ साधन हेत ॥ ३४६ ॥ सुजन
कहत भल पोचपथ पायन परखे भेद । कर्मनाश
सुरसरित मिस बिधिनिषेध बदवेद ॥ ३५० ॥ मणि
भाजन मधुपारई पूरण अमी निहारि । का छांड़िय
का संग्रही कहहु विवेक बिचारि ॥ ३५१ ॥ उत्तम
मध्यम नीच गति पाहन सिकता पानि । प्रीति परीक्षा
तिहुँन को वैर व्यतिक्रम जानि ॥ ३५२ ॥ पुण्य
प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पांच । लखहिं
सुजन परिहरहि खल सुनहु सिखावन सांच ॥३५३॥
नीच निरादर ऊंच के आदर सुखद विशाल । कदली
बदली विटपगति पेखहु बनश रशाल ॥३५४॥तुलसी
अपनो आचरण भलो न लागत कासु । तेहि न बसात
जो खात नित लहसुनहूकी बास ॥३५५॥ बुध लों विवे
की बिमल मति जेहिके रोष न राग । सुहृद सराहत साधु

जेहि तुलसी ताको भाग ॥ २५६ ॥ आपु आपु कहँ सब भलो आपन कहँ कोइ कोइ ॥ तुलसी सब कहँ जो भलो सुजन सराहिय सोइ ॥ २५७ ॥ तुलसी भलो सुसंगते पोच कुसंगति होइ ॥ नाउ किन्नरी तीर असि लोह विलोकहु लोइ ॥ २५८ ॥ गुण संगति गुरु होइ सो लघु संगति लघु नाम । चारि पदारथमें गनै नरक द्वारहू काम ॥ २५९ ॥ तुलसी गुरु लघुता लहत लघु संगति परिणाम । देवी देव पुकारियत नीचनारि नर नाम ॥ २६० ॥ तुलसी किये कुसंगथिति होइ दाहिनीवाम । कहि सुनि सकुचिय सूमखल गत हर शंकर नाम ॥२६१॥ बसि कुसङ्ग चह सुजनता ताकी आस निरास । तीरथहूको नाम भो गया मगह के पास ॥ २६२ ॥ राम कृपा तुलसी सुलभ गंग सुसंग समान । योजन परे जो जन मिलै कीजै आपु समान॥ २६३॥ ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सुयोग । होइ कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षण लोग ॥

३६४ ॥ जन्म योग मैं जानियत जग विचित्र गति देखि । तुलसी आखर अंकरस रँगे विभेद विशेखि ॥ ३६५ ॥ आखर जोरि विचार करु सुमति अंक लिखि लेखु । योग कुयोग सुयोगमय जग गति स-मुझि विशेखु ॥ ३६६ ॥ करु विचार चलु सुपथ भल आदि मध्य परिणाम । उलटे जपे जे रामरा सूधे राजा राम ॥ ३६७ ॥ होइ भलेके अनभलो होय दानिके सूम । होइ कपूतसपूत के ज्यों पावकमें धूम ॥ ३६८ ॥ जड़ चेतन गुण दोषमय बिश्व कीन्ह करतार । सन्त हंस गुण गहहिं पय परि हरि वारि विकार ॥ ३६९ ॥

सो०—पाट कीटते होइ ताते पाटम्बर रुचिर । कृमि पालै सब कोइ परम अपावन प्राणसम ॥ ३७० ॥

दो०—जो जो जेहि जेहि रस मगन तहँ सो मुद मन मानि । रस गुण दोष विचारिबो रसिक रीति पहिंचानि ॥ ३७१ ॥ सम प्रकाश तन पखिहु नाम भेद विधि कीन्हं । शशिपोषक शोषक समुझि जग

यश अपयश दीन्ह ॥ २७२ ॥ लोक वेदहूलौं दगा नाम भलेको पोच । धर्म राज यमराज पवि कहत सकोच न शोच ॥ २७३ ॥ विरुचि परखि यह सुजन जन राखि परखियहि मन्द । बड़वानल शोषत उदधि हर्ष बढ़ावत चन्द ॥ २७४ ॥ प्रभु सन्मुख भये नीचनर निपट भये बिकराल । रविरुखलखिदर्पण फटिक उगिलत ज्वाला जाल ॥ २७५ ॥ प्रभुसमीप गत सुजन जन होत सुखद सो बिचारि । लवण जलधि जीवन जलद बर्षत सुधा सवारि ॥ २७६ ॥ नीच निरावहिं निरस तरु तुलसी सींचहिं ऊख । पोपत पयद समान सब विष पियूषके रूख ॥ २७७ ॥ वर्षि विश्व हर्षित करत हरत तापऔ प्यास । तुलसी दोष न जलद को जो जल जरै जवास ॥ २७८ ॥ अमर दानि याचक मरहिं मरिमरि फिरि फिरि लेहिं । तुलसी याचक पातकी दातहि दूषण देहिं ॥ २७९ ॥ लखि गयंद लै चलहिं भजि श्वान सुखानो हाड़ । जगगुण मोल अ-

हारबल महिमा जानि किराड़ ॥ २८० ॥ कै निदरहु के आदरहु सिंहहि श्वान सियार। हरष विषाद न केसरिहि कुंजर गजहि निहार ॥ २८१ ॥ ठाढ़ो द्वार न देसकै तुलसी जे नर नीच । निन्दहिं बलि हरिचन्द्र को का कियो करण दधीच ॥ २८२ ॥ ईश शीश विलसत विमल तुलसी तरल तरंग । श्वान सरावक के कहे लघुता लहै न गंग ॥ २८३ ॥ तुलसी देवला देवकी लागे लाख करोरि । काक अभागे हगिभरयो महिमा भई कि थोरि ॥ २८४ ॥ निज गुण घटत न नाग नग परखि परोहत कोल । तुलसी प्रभु भूषण किये गुन्जा बढ़ै न मोल ॥ २८५ ॥ राकापति षोड़श उअहिं तारागण समुदाइ । सकल गिरिन्ह दव लाइये बिनु रवि राति न जाइ ॥२८६ ॥ भलो कहै बिन जानिहुं बिनु जाने अपवाद । ते नर दादुर जानि जिये करिय न हर्ष विषाद ॥ २८७ ॥ परसुख सम्पति देखि सुख जरहिं जे जड़ बिनु आगि । तुलसी तिनके भागिते चलै भलाई

भागि ॥ ३८८ ॥ तुलसी जे कीरति चहहिं परकी कीरति खोइ । तिनके मुहँ मसि लागिहै मिटिहि न मरिहैं धोइ ॥ ३८९ ॥ तन गुण धन महिमा धरम तेहि बिनु जो अभिमान । तुलसी जियत बिड़म्बना परिणामहि गतिजान ॥ ३९० ॥ सासुश्वशुर गुरु मातुपितु प्रभु भयो चहै सबकोइ । होनो दूजी ओर को सुजन सराहिय सोइ ॥ ३९१ ॥ शठ सहि सांसति पति लहत सुजन कलेश न काय ॥ गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिये गण्डाकि शिला सुभाय ॥ ३९२ ॥ बड़े विबुध दरबारते भूमिभूप दरबार । जापक पूजक पेखियत सहत निरादर भार ॥ ३९३ ॥ बिनु प्रपंच छल भीख भलि लहिये न किये कलेश । वामन बलि सो छल कियो दियो उचित उपदेश ॥ ३९४ ॥ भलो भले सें छल किये जन्म कनौड़ो होइ । श्रीपति शिर तुलसी लसति बलि वामन गति सोइ ॥ ३९५ ॥ विबुध काज वामन बलिहि छलो भलो जिय जानि । प्रभुता तजि वश भे तदपि मनकी गई न ग्लानि ॥ ३९६ ॥ स-

खल वक्र गति पञ्चग्रह चपरि न चितवत काहु। तुलसी सूधे सूर शशि समय विडम्बितराहु ॥ ३९७ ॥ खल उपकार विकार फल तुलसी जानजहान। मेंडुक मरकट वनिक वक कथा सत्य उपखान ॥ ३९८ ॥ तुलसी खल बाणी मधुर सुनि समुझिय हिय हेरि। रामराज बाधक भई मूढ़ मन्थरा चेरि ॥ ३९९ ॥ जोंक सूधि मन कुटिल गति खल विपरीत बिचारु। अन-हित सों नित सोखसो सो हित शोषनहारु ॥ ४०० ॥ नीच गुणी ज्यों जानिबो सुनि लखि तुलसीदास। ढीलिदियो गिरिपरत महि खैंचत चढ़तअकास॥४०१॥ भादरबरषत कोस शत बचैं जे बूंद बराइ। तुलसी त्यों खल वचन शर हिये गये न पराइ ॥ ४०२ ॥ पेरत कोल्हू मेलि तिल तिली सनेही जानि। देखि प्रीतिकी रीति यह अब देखी बरसानि ॥ ४०३ ॥ सहवासी काचो गिलहि पुरजन पाक प्रवीन। काल-क्षेप कहि मिल करहि तुलसी खग मृगमीन॥ ४०४॥

जासु भरोसे सोइये राखि गोद पर शीश । तुलसी तासु कुचाल ते रखवारो जगदीश ॥ ४०५ ॥ मारि खोज लहि सोह करि करि मत लाज न त्रास । मुये नीच ते मीच बिनु जे इनके विश्वास ॥ ४०६ ॥ पर द्रोही परदाररत परधन पर अपवाद । ते नर पामर पापमय देह धरे मनुजाद ॥ ४०७ ॥ वचन वेष क्यों जानिये मन मलीन नर नारि । शूर्पणखा मृग पूतना दश मुख प्रमुख बिचारि ॥ ४०८ ॥ हँसनि मिलनि बोलनि मधुर कटु करतब मनमाँह । छुवत जो सकुचै सुमति सो तुलसी तिनकी छाँह ॥ ४०९ ॥ कपटसार सूची सहस बांधि वचन परवास । कियदुराउ चहैं चातुरी सो शठ तुलसीदास ॥ ४१० ॥ वचन बिचार अचार तन मन करतब छलछूटि । तुलसी क्यों सुख पाइये अन्तर्यामिहि धूति ॥ ४११ ॥ शारदूलको स्वांग कर कूकुर को करतूति । तुलसी तापर चाहिये कीरति विजय विभूति ॥ ४१२ ॥ बड़े पाप बाढ़े किये

छोटे किये लजात। तुलसी तापर सुख चहत विधिसों बहुत रिसात ॥ ४१३ ॥ देशकाल करता करम वचन बिचार बिहीन। ते सुरुतरुतर दारिदी सुरसरितीर मलीन ॥ ४१४ ॥ साहसही शिख कोप बस किये कठिन परिपाक। शठ सङ्कट भाजन भये हठि कुजाति कपि पाक ॥ ४१५ ॥ राजकरत बिनु काजही करैं कुचालि कुसाज। तुलसी ते दशकन्ध ज्यों जैहैं सहित समाज ॥ ४१६ ॥ राज करत बिन काजही ठठहिं जे कूर कुठाट। तुलसी ते कर राज ज्यों जैहैं बारहबाट ॥ ४१७ ॥ सभा सुयोधन की शकुनि सुमति सराहन योग। द्रोण विदुर भीषम हरिहि कहैं प्रपञ्ची लोग ॥ ४१८ ॥ पाण्डुसुवन की सदसते नीको रिपुहितजानि। हरिहरसम सब मानियत मोहजानकी बानि ॥ ४१९ ॥ हितपर बढ़ै बिरोध जब अनहित पर अनुराग। रामबिमुख विधिबामगति सगुण अघाय अभाग ॥ ४२० ॥ सहज सुहृद गुरुस्वामिशिख जोन करै शिरमानि। सोप-

बरषत करषत आपुजल हरषत अर्वनिभानु । तुलसी चाहत साधु सुर सब सनेह सनमानु ॥ ४५५ ॥ श्रुति गुणकर गुनपूजु जग मृग यदि खेती खाउ । देहि लेहि धन धरणिधरु गयहु न जाइहि कोउ ॥ ४५६ ॥ ऊगुनपूगुन विरजक्रम आभ अभू गुणसाथ । हरो धरो गाड़ो दियो धन फिरि चढ़े न हाथ ॥ ४५७ ॥ रवि हर दिश गुण रस नयन मुनि प्रथमादिक बार । तिथि सबकाज नशावनी होइ कुयोग बिचार॥४५८॥ शशि शर नव दुइ छः दश गुण मुनि फल बसु हर भानु । मेषादिक क्रमते गनहि घातचन्द जिय जानु॥ ४५९ ॥ नकुल सुदरशन दरशनी क्षेमकरी चष चाष । दश दिशि देखत सगुन शुभ पूजहि मन अभिलाष ॥ ४६० ॥ सुधा साधुपुर तरुमुमन सुफल सुहावनि बात । तुलसी सीतापति भगति सगुन सु मङ्गल सात ॥ ४६१ ॥ भरत शत्रुसूदन लक्षण सहित सुमिरि रघुनाथ । करहु काज शुभ सांच सब मिलहि

सुमङ्गल साथ ॥ ४६२ ॥ राम लषण कौशिक स-
हित सुमिरहु करहु पयान । लक्ष लाभलै जगत यश
मंगल सगुन प्रमान ॥ ४६३ ॥ अतुलित महिमा वे-
दकी तुलसी किये बिचार । जो निंदत निंदित भयो
विदित बुद्धअवतार ॥ ४६४ ॥ बुधि किसान सर वेद
निज मते खेत सब सीच । तुलसी कृपि लखि जा-
निबो उत्तम मध्यम नीच ॥ ४६५ ॥ सहि कुबोल सा-
सति सकल अगइ अनट अपमान । तुलसी धर्म न
परिहरिय कहि करि गये सुजान ॥ ४६६ ॥ अनहित
भय परहित किये पर अनहित हितहानि । तुलसी
चारु बिचारु भल करिय काज सुनि जानि ॥ ४६७ ॥
पुरुषारथ पूरब करम परमेश्वर परधान । तुलसी पैरत
सरित ज्यों सबहि काज अनुमान ॥ ४६८ ॥
चलहु नीतिमग राम पग नेह निबाहब नीक । तुलसी
पहिरिय सो बसन जो न पखारे फीक ॥ ४६९ ॥
दोहा चारु बिचारु चलु परिहरि वादविवाद । सुकृत

सींवस्वारथ अवधि परमारथ मर्य्याद ॥ ४७० ॥ तु-
लसी समरथ सुमति जो सुकृती साधु सयान । जो
बिचारि व्यवहरीय जग खर्च लाभ अनुमान ॥४७१॥
जाइ योग जगनेम बिनु तुलसी के हित राखि । बि-
नपराध भृगुपति नहुप बेनु बकासुर साखि ॥ ४७२ ॥
बाड़ि प्रतीति गठिबन्धते बड़ो योग ते क्षेम । बड़ो सु
सेवक सांइते बड़ो नेमते प्रेम ॥ ४७३ ॥ शिष्य सखा
सेवक सचिव सुतिय सिखावन सांच । सुनिसमझहु
पुनि परिहरहु परम निरञ्जन पांच ॥ ४७४ ॥ नारि-
नगर भोजन सचिव सेवक सखा अगार । सरस
परिहरे रङ्गरस निरस विपाद विकार ॥ ४७५ ॥ दू-
टहिंनिज रुचिकाज करि रूठहिं काज बिगारि । तीय
तनय सेवक सखा मनके कंटकचारि ॥ ४७६ ॥
दीरघरोगी दारिदी कटु बच्न लोलुप लोग । तुलसी
प्राणसमानते होइँ निरादरयोग ॥ ४७७ ॥ पाहीखेती
लगनबढ़ ऋणकुब्याज मगखेत । बैर बढ़ै सो आपने

किये पांच दुखहेत ॥ ४७८ ॥ घायलगै लोहा ललकि खींचे लेइ नइ नीचु। समरथ पापी सो वयर जानि विसाही मीचु ॥ ४७९ ॥ शोचिय गृही जो मोहवश करै कर्मपद त्याग। शोचिय यती प्रपञ्चरुचि विगत विवेक विराग ॥ ४८० ॥ तुलसी स्वारथ सामुहो परमारथ तन पीठ। अन्ध कहै दुखपाइहै डिठिआरो केहि डीठ ॥ ४८१ ॥ विनु आंखिन की पानहीं पहिंचानत लखि पाइ। चारिनयनके नारिनर सूझत मीच न माइ ॥ ४८२ ॥ जूपै मूढ़ उपदेशको होतो योग जहान। क्यों न सुयोधन बोधकै आये श्याम सुजान ॥ ४८३ ॥ सोरठा ॥ फूलै फरै न वेत यदपि सुधा वरषहिं जलद। मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलैं विरञ्चि सम ॥ ४८४ ॥ दोहा ॥ रीझ आपनी बूझपर खीझ विचारि विहीन। ते उपदेश न मानहीं मोह महोदधिमीन ॥ ४८५ ॥ मन समुझै अन शोचनो अवसि समुझिअहि आपु। तुलसी आपु न समुझिये

पल पल परि परितापु ॥ ४८६ ॥ कूप खनतमन्दिर जरत आये धारिबबूर । बवहिं नवहिं निज काज शिर कुमति शिरोमणि कूर ॥ ४८७ ॥ निडर ईशते बीसकैं बीसबाहु सो होइ । गयो गयो कहे सुमति सब भयो कुमति कह कोइ॥४८८॥ जो सुनि समुझि अनी तरत जीगनरहैं जुसोइ । उपदेशबो जगाइबो तुलसी उचित न होइ ॥४८९॥ बहु सुखं बहुरुचि बचन बहु बहुअचार ब्यवहार । इनको भलो मनाइबो यह अज्ञान अपार ॥ ४९० ॥ लोगनि लोभ मनाइबो भलो होन की आस। करत गगनको आयऊ सो शठ तुलसी दास ॥ ४९१॥ अपयशयोग कि जानकी मणिचोरी कबकान्ह। तुलसी लोग रिझाइबो करपि कातिबो नान्ह ॥ ४९२ ॥ तुलसी जुपै गुमान को होतो कछू उपाउ । तौ कि जानकिहि जानि जिय परिहरते रघुराउ ॥ ४९३ ॥ मांगि मधुकरी खात ते सोवत गोड़पसारि । पाय प्रतिष्ठा बढ़िपरी ताते बाढ़ी रारि ॥ ४९४ ॥ तुलसी

भेड़ी की धसनि जड़ जनता सनमान। उपजतही अभिमान भो खोवत मूढ़ अपान॥ ४६५ ॥ लही आंखि कब आंधरे वांझ पूत कब ल्याय। कब कौड़ी काया लही जग वहराइच जाय॥ ४६६ ॥ तुलसी निरभय होत नर सुनियत सुरपुरजाइ। सो गति देखियत अछत तन सुख सम्पति गति पाइ॥ ४६७ ॥ तुलसी तोरत तीर तरु वकहित हंस विडारि। विगत नलिन अलि मलिन जल सुरसरि हूँ वढ़ियारि॥ ४६८॥ अधिकारी सब औसरा भलेउ जानिबे मन्द। सुधासदन वसुवारहौं चउथिउ चउथो चन्द॥ ४६९ ॥ त्रिविधि एक विधि प्रभु अनुग अवसर करहिं कुठाट। सूधो टेढ़ो सम विपम सब महँ वारहवाट॥ ५०० ॥ प्रभुते प्रभुगन दुखद लखि प्रजहिं सँभारै राउ। करते होत कृपाण को कठिन घोर घन घाउ॥ ५०१॥ व्यालहु ते विकराल वड़ व्यालफेन जिय जानु। उहके खाये मरत है उहखाये विनु प्रान॥ ५०२ ॥ कारण

से कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर । कुलिश अ-
स्थिते उपलते लोह कराल कठोर ॥ ५०३ ॥ काल
विलोकत ईशरुख भानु काल अनुहारि । रविहि राउ
राजहिं प्रजा बुध व्यवहरहि विचारि ॥ ५०४ ॥ यथा
कमल पावन पवन पाइ कुसङ्ग सुसङ्ग । कहि अकुवास
सुवास तिमि काल महीशप्रसङ्ग ॥ ५०५ ॥ भलेहु
चलतपथ योगभय नृपति योग नय नेम । सुतिय सु-
भूपति भाषियत लोहपवारित हेम ॥ ५०६ ॥ माली
भानु किसानसम नीति निपुण नरपाल । प्रजा भाग
वश होहिंगे कवहुँ २ कलिकाल ॥ ५०७ ॥ बरषत
हर्षत लोग सब करषत लखै न कोइ । तुलसी प्रजा
सुभागते भूप भानु सो होइ ॥ ५०८ ॥ सुधा सुजान
कुनाज पल आम अशनसम जानि । सुप्रभु प्रजा
हित लेहि कर सामादिक अनुमानि ॥ ५०९ ॥ पाके
पकये विटप दल उत्तम मध्यम नीच । फलनरु लहैं
नरेश त्यों करि विचार मन बीच ॥ ५१० ॥ रीझि खी-
झि गुरु देत सिख सखा सुसाहब साध ॥ तोरिखाय
फल होइ भल तरु काटे अपराध ॥ ५११ ॥ धरणिधेनु

चारित प्रजा तासु बक्षये नहोइ। हाथ कछू नहिं लागि है किये गोडकीगोइ॥ ५१२ ॥ चढ़े बहूरे चङ्ग ज्यों ज्ञान ज्यों शोक समाज। कर्म्म धर्म्म सुख सम्पदा ज्यों जानिबे कुराज॥ ५१३ ॥ कराटक करिकरि परत गिरि शाखासहस खजूरि। मरहिं कुनृपकरि करि कुनृप सो कुचाल भरभूरि॥ ५१४ ॥ कालतोपची तुपकमहि दारू अनय कराल। पापपलीता कठिन गुरु गोलापुहमीपाल॥ ५१५ ॥ भूमिरुचिर रावणसभा अङ्गदपद महिपाल। धरम रावणहि सीय बल अचल होत शुभकाल॥ ५१६ ॥ प्रीति रामपद नीतिरत धर्म्म प्रतीति सुभाइ। प्रभुहि न प्रभुता परिहरहि कबहुँ वचन मन काइ॥ ५१७ ॥ करके कर मन के मनहि वचन वचन गुण जानि। भूपहि भूलि न परिहरै विजय विभूति सयानि॥ ५१८ ॥ गोली बाण सुमन्त्र शर समुझि उलटि मन देखु। उत्तम मध्यम नीच प्रभु वचन विचारि विशेखु॥ ५१९ ॥ शत्रु सयानो सलिल ज्यों राखि शीश रिपु नाव। बूड़त लखि पग डगत लखि चपरि चहूं दिशिधाव॥ ५२०॥

रैयत राजसमाज घर तन धन धर्म सुबाहु। शांत सुसचिवन सौंपि सुख बिलसहिं नित नरनाहु ॥ ५२१ ॥ मुखिया मुखसों चाहिये खान पानको एक। पालै पोषै सकल अँग तुलसी सहित विवेक ॥ ५२२ ॥ सेवक कर पद नयन से मुख से साहब होय। तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहिं सोय ॥ ५२३ ॥ मन्त्री गुरु अरु वैद्य जो प्रिय बोलहिं भय आश। राज धर्म्म तन तीन कर होइ वेगही नाश ॥ ५२४ ॥ रसना मन्त्री दशनजन तोष पोष निजकाज। प्रभु करसेन पदादिका बालक राजसमाज ॥ ५२५ ॥ लकड़ी डौवा करछुली सरसुकाज अनुहारि। सो प्रभु संग्रह परिहरहिं सेवक सखा विचारि ॥ ५२६ ॥ प्रभु समीप छोटे बड़े निबल होत बलवान। तुलसी प्रकट विलोकिये कर अँगुली अनुमान ॥ ५२७ ॥ साहब तें सेवक बड़ो जो निज धर्म्म सुजान। राम बांधि उतरे उदधि नांघिगयो हनुमान ॥ ५२८ ॥ तुलसी भल बरतरु बढ़त निज मूलहि अनुकूल। सबहिं भांति सबकहँ सुखद दलनि फलनि बिनु फूल ॥ ५२९ ॥

सघन सगुण सधरम सगण सबल समाइ महीप। तुलसी जे अभिमान बिन ते त्रिभुवन के दीप ५३० तुलसी निजकरतूति बिनु मुक्तजानि जब कोइ। गयो अजामिल लोकहरि नाम सक्यो नहिं धोइ ॥ ५३१ ॥ बड़ो गहेते होत बड़ ज्यों बावनकर दण्ड। श्री प्रभुके सँगसो बड़ी गयो अखिल ब्रह्मण्ड ॥ ५३२ ॥ तुलसी दान जो देत हैं जल में हाथ उठाय। प्रतिग्राही जीवै नहीं दाता नरकै जाय ॥ ५३३ ॥ आन न छोड़ो साथ जब तादिन हितू न कोइ। तुलसी अम्बुज अम्बु बिन तरणि तासु रिपु होइ ॥ ५३४ ॥ उरबी परि कुलहीनहीं ऊपर कलाप्रधान। तुलसी देखु कलाय गति साधन धन पहिचान ॥ ५३५ ॥ तुलसी सङ्गति पोचकी सुजन होति भयदानि। यौ हरिरूप सुताहिते कीनो गोहरि आनि ॥ ५३६ ॥ कलिकुचालि शुभमति हरणि सरलैदण्डै चक्र। तुलसी यह निश्चय भई बाढ़ी लेत न बक्र ॥ ५३७ ॥ गो खग शेष गवारि खग तीनौ माह विशेक। तुलसी पीवै फिर चलैं रहैं फिरैं सँग एक ॥ ५३८ ॥ साधन समय सो सिद्धि

लहि उभै मूल अनुकूल । तुलसी तीनिउ समय सम ते महिमङ्गलमूल ॥ ५३६ ॥ मातु पिता गुरु स्वामि सिख शिरधरि करहिं स्वभाय । लहेउ लाभ तिन जन्मकर नतरु जन्म जग जाय ॥ ५४० ॥ अनुचित उचित विचार तजि जे पालहिं पितु बैन । ते भाजन सुख सुयश के बसहिं अमरपतिऐन ॥ ५४१ ॥

सो०—सहजअपावनिनारि पतिसेवतशुभगतिलहै । यशगावतश्रुतिचारि अजहुँ तुलसिकाहरिहिंप्रिय ५४२

दो०—शरणागत कहँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि । ते नर पामर पापमय तिन्हैं बिलोकत हानि ॥ ५४३ ॥ तुलसी तृण जलकूल को निरधन निपट निकाज । की राखै की सँगचलै बांह गहे की लाज ॥ ५४४ ॥ रामायण अनुहरत सिख जगभयो भारत रीति । तुलसी शठकी को सुनै कलि कुचालि पर प्रीति ॥ ५५५ ॥ पात पातके सींचिबे बरी बरीके लोन । तुलसी खोटे चतुरपनि कलि डहके कहु कौन ॥ ५४६ ॥ प्रीति सगाई सकल गुण बणिज उपाय अनेक । कल बलछल कलिमल मलिन डहकत एक

हिएक ॥ ५४७ ॥ दम्भसहित कलिधर्म सन छल समेत व्यवहार । स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ॥ ५४८ ॥ चोर चतुर बटमार भट प्रभु प्रिय भरुहा भण्ड । सब भक्षक परमारथी कलि सुपन्थ पाखण्ड ॥ ५४९ ॥ अशुभ बेप भूषण धरैं भक्ष अभक्ष जे खाहिं । ते योगी ते सिद्ध नर पूजित कलियुग माहिं ॥ ५५० ॥

सो०—जे अपकारी चार तिन कर गौरव मानतेइ । मन वच कर्म लबार ते वक्ता कलिकाल महँ ॥ ५५१ ॥

दो०—ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात । कौड़ी लगि ते मोह वश करहिं विप्र गुरु घात ॥ ५५२ ॥ बादहिं शूद्र द्विजन सन हम तुमते कछु घाटि । जानहिं ब्रह्म सो विप्रवर आंखि दिखावहिं डाटि ॥ ५५३ ॥ साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपखान । भगति निरूपहिं भगतकलि निन्दहिं वेद पुरान ॥ ५५४ ॥ श्रुति सम्मत हरिभक्तपथ संयुत बिरति विवेक । तेहि परिहरहिं विमोहवश कल्पहिं पन्थ अनेक ॥ ५५५ ॥ सकल धर्म विपरीत कलि कल्पित कोटि कुपन्थ । पुण्य पराय बहारवन दुरे पुराण

शुभग्रन्थ ॥ ५५६ ॥ धातुवाद निरुपाधि वर सदगुरु लाभ समीत । देवदरश कलिकाल में पोथी दूर समीत ॥ ५५७ ॥ सूरसदन तीरथ पुरन निपट कुचालि कुसाज । मनहुँ मवासे मारि कलि राजत सहित समाज ॥ ५५८ ॥ गोंड गवांर नृपाल महि यमन महा-महिपाल । साम न दाम न भेद कलि केवल दगड कराल ॥ ५५९ ॥ फोरहि शिल लोढ़ा सदन लागे अढुक पहार । कायर कूर कपूत कलि घर घर सहस डहार ॥ ५६० ॥ प्रकट चारि पद धर्म के कलि महँ एक प्रधान । येन केन विधि दीन्हहु दान करै कल्यान ॥ ५६१ ॥ कलियुग समयुग आन नहिं जो नर कर विश्वास । गाइ राम गुण गण विमल भवतर बिनहि प्रयास ॥ ५६२ ॥ श्रवण घटहु पुनि दृगघटहु घटौ सकल बलदेह । इते घटे घटिहै कहा जो न घटै हरि नेह ॥५६३॥ तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन । अब तो दादुर बोलिहैं हमैं पूछिहै कौन ॥ ५६४ ॥ कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दम्भ पाखगड । दहन रामगुणग्राम जिमि ईंधन अनल

प्रचण्ड ॥ ५६५ ॥ सोरठा ॥ कलि पाखण्ड प्रचार प्रबल पाप पामर पतित । तुलसी उभै अधार रामनाम सुरसरि सलिल ॥ ५६६ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्र मुखचन्द्रमा चित चकोर जब होइ । राम काज सब काम शुभ समय सुहावन सोइ ॥५६७॥ बीज रामगुणगण नयन जल अंकुर पुलकालि । सुकृती सुनत सुखेत बर विलसत तुलसी शालि ॥५६८॥ तुलसी सहित सनेह नित सुमिरहु सीताराम । सगुण सुमङ्गल शुभ सदा आदि मध्य परिणाम ॥ ५६९ ॥ पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिणाम । सुलभ सिद्धि सब साहिबो सुमिरत सीताराम ॥ ५७० ॥ मणिमय दोहा दीप जहँ उर घर प्रकट प्रकाश । तहँ न मोहमय तम तभी कलि कज्जली विलाश ॥ ५७१ ॥ का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिये सांच । काम जो आवै कामरी का लै करै कुमांच ॥ ५७२ ॥

इति श्रीगोस्वामी श्रीतुलसीदासकृत
दोहावली सम्पूर्णा ॥